PERSONALITY - DISORDERS

व्यक्तित्व - विकृतियाँ

व्यक्तित्व विकृति या जिसे कारसन तथा बूचर (1992) ने चारित्रिक विकृति भी कहा जाता है यह एक ऐसी सामान्य श्रेणि है, जिसमे इन व्यक्तियो को रखा जाता है, जिनके व्यक्तित्व के शीलगुण एवं उनका विकास इतना अपरिपक्व तथा विकृत होता है कि अपने वातावरण के लगभग प्रत्येक चीज, घटनाओ एवं व्यक्तियो के बारे में वे एक दोष पूर्ण चिंतन तथा प्रत्यक्षण करते हैं और जिनके कारण इनमे कुसमयोजनशील इतनी बढ जाती है, कि लोग इससे तंग आ जाते हैं और पूरे परिवार के सदस्य उनके व्यवहार पर जरूरत से ज्यादा चिंतित हो उठते हो। व्यक्तित्व विकृति किसी तनावपूर्ण स्थित के प्रति एक प्रतिक्रिया नही होती है जैसा कि हम समायोजन विकृति मे पाते हैं और न ही वह चिंता के प्रति इस तरह के बचाव का परिणाम होता है, जैसा कि मानसिक विकृति में हम पाते है, बल्कि यह एक तरह का अपरिपक्व व्यक्तित्व विकास का प्रतिफल होता है। इस तरह कि व्यक्तित्व विकृतियों के लक्षण किशोरावस्था तक स्पष्ट हो जाते हैं जो व्यस्कावस्था मे भी मौजूद रहते हैं।

व्यक्तित्व विकृति मूलत: शीलगुणो की विकृति है। दूसरे शब्दो में " व्यक्तित्व विकृति वैसा विकृति है जो पर्यावरण को कुसमायोजित ढंग से प्रत्यक्षण करने तथा उसके प्रति अनुक्रिया करने की प्रकृति की ओर ईशारा करता है।

कारसन तथा बूचर के शब्दो मे " सामान्यत: व्यक्तित्व विकृतियाँ व्यक्तिगत शीलगुणों का एक उग्र या अतिरंजित प्रारूप है जो व्यक्ति को उतपाती व्यवहार विशेषकर अंतवैयक्तिक प्रकृति के उतपाती व्यवहार को करने के लिए एक झुकाव उत्पन करता है। "

DSM-IV के अनुसार - "व्यक्तित्व विकृति व्यवहार तथा आंतरिक अनुभूतियों का एक ऐसा स्थायी पैटर्न होता है जो व्यक्ति की संस्कृति की प्रत्याशाओं से लम्बे रूप से विचलित होता है, अनम्य एवं व्यापक होता है, जिसकी शुरुआत किशोरावस्था या आरंभिक वाल्यावस्था में होता है जो विशेष समय तक स्थिर रहता है तथा जिससे तकलीफ एवं हानि होती है।"

डेविसन एवं नील के अनुसार - "व्यक्तित्व विकृति विकृतियों का एक विषम समूह है जो वैसे व्यवहारों एवं अनुभूतियों का स्थाई एवं अनम्य पैटर्न होता है. जो सांस्कृतिक प्रत्याशाओं से विचलित होता है और तकलीफ एवं हानि होती है या पहुँचाती है।"

उपयुक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है, कि व्यक्तित्व विकृति में व्यक्ति में व्यवहारात्मक विसमताओं अर्थात् व्यवहारों में विषमताओं की मात्रा इतनी अधिक एवं विचित्र होती है कि दूसरे लोगों के लिए इनमें कोई अर्थ निकलना संभव नहीं होता है, तथा साथ ही साथ उनका व्यवहार पूर्वानुमानेय हो जाता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जाता है, कि व्यक्ति के व्यवहार कुछ ऐसा होता है जो अन्य लोगों को स्विकार या मान्य नहीं रह जाता है। ऐसे व्यक्ति में सामान्यतः किसी प्रकार की कोई चिंता या विषाद आदी नहीं होता है। व्यक्तित्व विकृति की श्रेणि में किसी विकृति को रख जाने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति शीलगुण का स्वरूप चिरकालिक हो।

उपयुक्त विवेचनाओं के आधार पर व्यक्तित्व विकृति का अर्थ स्पष्ट होता है